COURSE :- BACHELOR OF LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE (BLIS)

PAPER :- 3RD

TOPIC :- COMMON ISOLATION

PREPARED BY :- DINESH SINGH, CHIEF COORDINAOR, LIBRARY SCIENCE, NOU

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

1. भूमिका (Introduction)
2. इतिहास (History)
3. परिभाषा (Definition)
4. कोलन वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल का प्रयोग
(Use of Common Isolates in Colon Classification Scheme)
5. ड्युई दशमलव वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल का प्रयोग
(Use of Common Isolates in Dewey Decimal Classification Scheme)

भूमिका (Introduction)

Scanned with CamScanner

संस्करण में रूप विभाजन (Form Division) के नाम से सामान्य एकल का प्रयोग किया था। समय के अन्तराल के बाद इसमें अनेक परिवर्तन हुए हैं। 1932 में प्रकाशित डी० सी० के 13वें संस्करण में इसका नाम सामान्य उप-विभाजन (Common Sub-division) कर दिया गया। सामान्य उप-विभाजन को तीन श्रेणियों में सूचीबद्ध (listed) किया गया — Miscellaneous Common Sub Division, View Points और Form Division। डी० सी० के 17वें संस्करण में इसका नाम बदलकर मानक उप-विभाजन (Standard Subdivision) कर दिया गया। आज डी० सी० में सामान्य एकल को Standard Subdivison के नाम से जाना जाता है, जिसकी तालिका प्रथम खण्ड के तालिका (Table) I में दिया गया है।

सार्वभौम वर्गीकरण प्रणाली (U.DC) में सामान्य एकल का नामकरण Auxiliary Subdivision पद से किया गया है। इस पद्धति में दो प्रकार के सहायक तालिकाओं का निर्माण किया गया है —

(i) सामान्य (Common)

(ii) विशिष्ट (Special)

ब्लिस ने अपनी वर्गीकरण पद्धति Bibiographic Classification (BC) में दो प्रकार के सामान्य एकलों—पूर्व (Anterior) एवं सहायक (Ancillary) की व्यवस्था की है।

चार्ल्स कटर ने भी अपनी विस्तारशील वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल की धारणा को स्वीकार किया है। ब्राउन (JD Brown) ने अपनी विषय वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकलों के सिद्धांत को प्रतिपादित किया है। उन्होंने अपनी वर्गीकरण पद्धति में कुछ ऐसे एकलों को सूचीबद्ध किया है, जिनका प्रयोग कुछ वर्गों के साथ सामान्य रूप से किया जा सकता है।

डॉ० रंगनाथन ने अपनी कोलन वर्गीकरण पद्धति में इस धारणा का वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया है। उन्होंने इस पद्धति के प्रथम संस्करण (1933) में इसका सामान्य उप-विभाजन (Common Sub-division) नाम से प्रयोग किया तथा स्थान एकल (Space Isolates) एवं काल एकल (Time Isolates) के लिए अलग से सारणियों का निर्माण किया था। इस पद्धति के चतुर्थ संस्करण में पूर्ववर्ती (Anteriorising) एवं परवर्ती (Posteriorising) सामान्य एकलों की अलग-अलग सारणियाँ बना दी गईं। इस पद्धति के पाँचवें संस्करण (1957) में सर्वप्रथम सामान्य एकल (Common Isolate) नाम दिया गया। सप्तम संस्करण (1987) में इस धारणा को और अधिक विस्तार रूप से प्रस्तुत किया गया है।

परिभाषा (Definition)

आज का वैज्ञानिक युग ज्ञान-विस्फोटन (Explosion of knowledge) का सामना कर रहा है। लेखक द्वारा ग्रंथ (Book) में वर्णित विषय को विभिन्न दृष्टिकोण से अथवा विभिन्न रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। अतः, प्रत्येक वर्गीकरण पद्धति का निर्माता अपनी पद्धति में इस प्रकार के ग्रंथों के लिए वर्गांकनिर्माण की व्यवस्था करता है। जिस तत्त्व द्वारा यह व्यवस्था की जाती है, उसे 'सामान्य एकल' कहा जाता है। ये ऐसे विचार एकल होते हैं, जिनका प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग में आवश्यकतानुसार किया जा सकता है तथा ये सभी जगह एक ही अर्थ का बोध कराते हैं।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

डॉ० रंगनाथन के शब्दों में —

"A Common Isolate is an isolate idea denoted by the same isolate term and represented by the same isolate number in more or less every class having it."

अर्थात "सामान्य एकल ऐसे विचार एकल होते हैं, जिनका प्रयोग उसी पद तथा उसी एकल अंक द्वारा पद्धति के प्रत्येक वर्गों में एक ही रूप में किया जाता है।"

दूसरे शब्दों में, "ज़िस एकल को सभी संयुक्त विषय अथवा मूल विषय में से किसी के साथ जोड़ा जा सकता है, तथा प्रत्येक वर्ग में एक ही प्रकार के अर्थ को व्यक्त करता है तथा एक ही प्रकार के कार्य करता है, उसे सामान्य एकल कहते हैं।"

अत: वर्गीकरण पद्धति के लिए सामान्य एकल एक आवश्यक तत्त्व है। इसके अभाव में ज्ञान जगत् से प्राप्त-विषयों का वर्गीकरण असंभव है।

कोलन वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल का प्रयोग

(Use of Common Isolates in Colon Classification Scheme)

डॉ० रंगनाथन ने अपने समय के उपलब्ध समस्त वर्गीकरण पद्धतियों का गहन अध्ययन के उपरांत अपनी वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल की धारणा को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

इन्होंने सामान्य एकल को दो श्रेणियों में विभाजित किया है :—

(i) **पूर्ववर्ती सामान्य एकल** (Anteriorising Common Isolate = ACI) :— ये ऐसे सामान्य एकल् हैं जिनका प्रयोग किसी मुख्य वर्ग अथवा उसके किसी पक्ष के साथ बिना किसी योजक चिह्न के किया जाता है। अर्थात आवश्यकतानुसार किसी वर्ग (Class) के साथ बिना योजक चिह्न के इसे जोड़ा जाता है।

उदाहरणार्थ :—

Periodical of Library Science 2 m

History of Public Library 22 ν

यहाँ Periodical एवं History का प्रयोग सामान्य एकल के रूप में हुआ है। इनके लिए क्रमश: m, ν चिह्न का प्रयोग किया गया है।

इस सामान्य एकल का प्रयोग ऐसे विषयों के लिए किया जाता है, जिन विषयों का अध्ययन किसी मूल विषय के अध्ययन करने से पूर्व किया जाता है। इसी वजह से जिन विषयों के वर्गांक के साथ इनका प्रयोग होता है, उनसे संबंधित प्रलेखों को उस विषय से संबंधित सामान्य प्रलेखों से पहले व्यवस्थित किया जाता है।

पूर्ववर्ती सामान्य एकल तीन प्रकार के होते हैं :—

(i) **देश पक्ष के पूर्व प्रयोग होने वाले सामान्य एकल** (ACI applicable before Space facet) :—

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

इस प्रकार के पूर्ववर्ती सामान्य एकल का प्रयोग वर्गांक निर्माण के समय देश पक्ष उपस्थित रहने पर उसके पूर्व किया जाता है। इसकी विस्तृत सूची सी० सी० के छठें संस्करण के पृ० 2.5 पर दी गई है। इस प्रकार के सामान्य एकलों के सामने पक्ष परिसूत्र (Facet formula) दिये गये हैं।

उदाहरणार्थ :—

History of Library Science 2v

History of Library Science in India 2v 44

यहाँ दूसरे उदाहरण में India, देश पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है। History के लिए v चिह्न का प्रयोग किया गया है जो पूर्ववर्ती सामान्य एकल का प्रतिनिधित्व करता है। अत:, वर्गांक के निर्माण में देश पक्ष India के पूर्व v पूर्ववर्ती सामान्य एकल का प्रयोग करके 2v 44 वर्गांक का निर्माण किया गया है। ACI के आगे पीछे किसी योजक चिह्न का प्रयोग नहीं होता है। अत:, देश पक्ष का योजक चिह्न (.) (Dot) का प्रयोग वर्गांक के निर्माण में नहीं हुआ है।

पूर्ववर्ती सामान्य एकल k,m,n एवं p का परिसूत्र Facet formula में [P], [P2] है।

जैसे :— mP, P2

Journal of Physics, India, 1950

इसका वर्गांक होगा Cm 44, N50

यहाँ 44 = India [P1] का प्रतिनिधित्व करता है।

तथा, N50 = 1950 [P2] का प्रतिनिधित्व करता है।

(ii) **केवल देश पक्ष के बाद प्रयोग होनेवाले सामान्य एकल** (ACI applicable only after Space facet) :—

इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग केवल देश पक्ष के बाद ही किया जाता है।

जैसे :— Administrative Report of University Education in India

इसका वर्गांक होगा T.44r

यहाँ r Administrative Report के लिए प्रयोग किया गया है जो कि देश पक्ष India के बाद बिना किसी योजक चिह्न के जोड़ा गया है।

(iii) **केवल काल पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले सामान्य एकल** (ACI applicable only after time facet) :—

इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग केवल काल (Time) पक्ष के बाद ही किया जा सकता है।

जैसे :—

Report of Advisory Committee on Public Libraries in India (1957)

वर्गांक (class number) — 22. 44' N57t

Survey of Women Education in India upto 1975

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

वर्गांक (Class numbcr) – T 55.44'N75t4

यहाँ Rcport of Committcc तथा Survcy के लिए क्रमशः t एवं t4 सामान्य एकल का प्रयोग काल पक्ष के बाद किया गया है।

परवर्ती सामान्य काल (Posteriorising Common Isolate = PCI) :–

इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग योजक चिह्न के द्वारा मुख्य वर्गों अथवा उनके पक्षों के साथ किया जाता है। कोलन के छठें संस्करण में व्यक्तित्व परवर्ती सामान्य एकल (Pcrsonality Posteriorising Common Isolatc) एवं ऊर्जा परवर्ती सामान्य एकल (Encrgy Posteriorising Common Isolatc) का प्रयोग क्रमशः व्यक्तित्व के कोमा एवं ऊर्जा के कोलन चिह्न के साथ किया गया है।

परवर्ती सामान्य एकल से संबंधित प्रलेख का अध्ययन मूल विषय के अध्ययन के बाद ही करना उचित समझा जाता है। जैसे :—

Criticism of Godan

0152, 3M80, G : g

यहाँ (: g) ऊर्जा परवर्ती सामान्य एकल है। गोदान के अध्ययन के बाद ही गोदान की आलोचना नामक ग्रंथ का अध्ययन उपयुक्त होगा। अतः, इसे संग्रह में मुख्य विषय के बाद ही व्यवस्थित किया जाना उपयुक्त माना जाता है।

1. परवर्ती व्यक्तित्व सामान्य एकल (PCI - Personality Common Isolate) :–

इस तरह के सामान्य एकल का प्रयोग प्रायः देश पक्ष के बाद कोमा (,) चिह्न लगाकर किया जाता है।

जैसे :— Medical Profession in India L.44,b

Mathematical Society of India B.44,g

यहाँ b और g क्रमशः Profession एवं Learned Society के लिए प्रयोग किया गया है जो कि परवर्ती व्यक्तित्व सामान्य एकल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इसके अंतर्गत संस्था, संस्थान एवं संघ के नाम को व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए अनुसूची के पृ० सं० 2.6 पर निम्न परिसूत्र (Facet formula) दिया गया है :—

[CI], [P], [P2]; [E]

इस परिसूत्र के प्रयोग हेतु निर्देश दिया गया है कि सबसे पहले व्यक्तित्व PCI का प्रयोग करना चाहिए इसके बाद संघ एवं संस्था के नाम को व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए [P] पक्ष के लिए एकल संख्या से वर्णानुक्रम विधि (AD) से यदि संस्था स्थानीकृत (Localised) है और कालक्रम विधि (CD) से (जब संस्था स्थानीकृत नही है) प्राप्त की जानी चाहिए।

जैसे :— Indian Library Association (1933)

2.44,g,9N3

यहाँ ILA स्थानीकृत नहीं है अतः, कालक्रम विधि का प्रयोग अंक 9 के बाद किया गया है। N3, 1933 का प्रतिनिधित्व करता है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

आवश्यकतानुसार [P] पक्ष की एकल संख्या के बाद [P2], [E] एवं [T] पक्षों का प्रयोग कर वर्गांक को विस्तार किया जा सकता है। इन तीनों पक्षों की एकल संख्याओं को मुख्य वर्ग इतिहास (History) से प्राप्त करने का निर्देश दिया गया है।

Functions of President of ILA during 1995.

(ILA was established in 1933)

वर्गांक (Class number) – 2.44, g, 9N3, 1 : 3'N95

उपरोक्त उदाहरण में President एवं Function का एकल संख्या मुख्य वर्ग इतिहास (History) के क्रमशः [P2] एवं [E] पक्ष से लिया गया है।

2. परवर्ती ऊर्जा सामान्य एकल (PCI - Energy) :–

इस प्रकार के सामान्य एकल का प्रयोग ऊर्जा पक्ष के योजक चिह्न कोलन (:) के साथ किया जाता है।

Criticism of Hindi Poetry 0152,1:g

Research in Library Science 2:f

Calculating of Income Tax X 724 : b1 यहाँ : g, : f,: b1 क्रमशः परवर्ती ऊर्जा सामान्य एकल है।

ड्युई दशमलव वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल
(Common Isolates in DDC)

ड्युई दशमलव वर्गीकरण (DDC) पद्धति के विभिन्न संस्करणों में सामान्य एकलों का नाम बदलता रहा है। विभिन्न संस्करणों में इन्हें निम्नलिखित नामों से व्यवस्थित किया गया है —

2 से 12 संस्करण तक रूप विभाजन (Form Division)

13वें संस्करण में सामान्य उप विभाजन (Common sub division)

14वें संस्करण में एकीकृत उप विभाजन (Uniform sub division)

15वें एवं 16वें संस्करण में रूप विभाजन (Form Division)

17वें से 21वें संस्करण तक मानक उप विभाजन (Standard subdivision)

19वें संस्करण में मानक उप विभाजन निम्नलिखित हैं जिन्हें प्रथम खण्ड के प्रथम तालिका (Table) में सूचीबद्ध किया गया है—

—01 दर्शन एवं सिद्धांत

—02 विविध

—03 शब्द कोश, विश्वकोश, शब्दानुक्रमनिकाएँ

—04 सामान्य प्रयोग के विशिष्ट प्रकरण

—05 सामयिक प्रकाशन

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

—06 संस्थाएँ एवं व्यवस्थापन

—07 अध्ययन एवं शिक्षण

—08 व्यक्तियों के समूह के मध्य विषय का इतिहास व वर्णन

—09 ऐतिहासिक एवं भौगोलिक विवरण

इस पद्धति में मानक उप विभाजन के प्रयोग के लिए कोई सामान्य नियम नहीं दिए गए हैं, बल्कि प्रत्येक विषय के साथ दिए गए निर्देशों के अनुसार उनका प्रयोग किया जाना चाहिए। वर्गांक (Class number) के निर्माण के समय इसके प्रयोग से पूर्व अच्छी तरह जाँच कर लेनी चाहिए कि उस विषय की तालिका में ही कहीं मानक उप विभाजन का प्रतिनिधित्व करने हेतु एकलों (Isolate) का निर्माण तो नहीं कर दिया गया है। अगर उस विषय में ऐसी व्यवस्था पहले से हों तो मानक उप विभाजन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जैसे :— Political Thcory 320.5

Rclative Thcory 530.11

यहाँ मानक उप विभाजन (SS) के 01 का प्रयोग नहीं करना चाहिए; क्योंकि उपरोक्त दोनों वर्गांकों के निर्माण हेतु संबंधित विषय के अनुसूची में ही एकल संख्या उपलब्ध है।

इस पद्धति की अनुसूची (Schedule) अर्थात खण्ड दो (2) में मानक उप विभाजन के प्रयोग हेतु जिन मुख्य विषयों में निर्देश दिए गए हैं, उनपर ध्यान देते हुए वर्गांक का निर्माण किया जाना चाहिए।

(i) **एक शून्य का प्रयोग —**

जिन विषयों के साथ इसका प्रयोग एक शून्य लगाकर करने का निर्देश हो वहाँ संबंधित विषय के साथ वहाँ मानक उप विभाजन के साथ संलग्न एक शून्य के साथ ही करना चाहिए।

जैसे — Dictionary of Political Science 320.03

Study & Teaching of Law 340.07

(ii) दो शून्य के साथ मानक उप विभाजन का प्रयोग — इस पद्धति की अनुसूची में कहीं-कहीं विषय के साथ मानक उप विभाजन जोड़ने के लिए दो शून्य संलग्न करने का निर्देश दिया गया है।

जैसे :—

Journal of Adult Education 374.005

Dictionary of Human Diseases 616 + 003 = 616.003

Journal of Constitutional Law 342 + 005 = 342.005

(iii) तीन शून्य के साथ मानक उप विभाजन का प्रयोग —

कुछ वर्गांकों के निर्माण हेतु मानक उप विभाजन (SS) जोड़ने के लिए तीन शून्यों के प्रयोग का निर्देश अनुसूची में दिया गया है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

जैसे :—

Journal of Public Administration 350 + 0005 = 350.005

Journal of Medical Library 062 . 61 + 0005 = 026.610005

(iv) जहाँ अनुसूची में मानक उप विभाजन के प्रयोग का कोई निर्देश नहीं दिया गया है वहाँ निम्न तरह से इसका प्रयोग किया जाता है —

(क) यदि वर्गांक के अन्त में एक शून्य लगा हो तो उसे हटाकर मानक उप विभाजन का प्रयोग करना चाहिए।

जैसे :—

Dictionary of Library Science

020 + 03 = 020.3

यहाँ बायीं ओर के वर्गांक के अन्त में एक शून्य है जिसे हटाकर 03 मानक उप विभाजन का प्रयोग किया गया है।

(ख) यदि वर्गांक के अन्त में दो शून्य हो तो उन्हें हटाकर मानक उप विभाजन का प्रयोग करना चाहिए।

जैसे :— Journal of Philosophy

1ϕϕ + 03 = 103

यहाँ बायीं ओर के दोनों शून्य को हटाकर Standard Subdivision का प्रयोग किया गया है

(ग) यदि वर्गांक के अन्त में कोई शून्य न हो और न कोई निर्देश हो तो उसके साथ सीधे मानक उप विभाजन को जोड़ देना चाहिए।

जैसे :— Journal of Sociology 301 + 05 = 301.05

Encyclopaedia of Islam

297 + 03 = 297.03

प्राय: दो मानक उप विभाजन का प्रयोग एक साथ नहीं किया जाता है। यदि किसी विषय के वर्गांक में दो मानक उप विभाजन आ रहा हो तो उनमें से एक का ही प्रयोग वरीयताक्रम (Preferencial) के आधार पर किया जाना चाहिए।

जैसे :— Encyclopaedia of Organisation of Applied Psychology

यहाँ Encyclopaedia और Organisation दोनों मानक उप विभाजन (SS) है जिनका अंकन, क्रमश: 03 एवं 06 है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner